

Class - B.A. Part - 1

Sub - Hindi (HON) Paper - 1

by Ravishankar Sharma - R.B.J.R. College

① प्रेमसाधन काव्य के विचार एवं सिद्धांत पर प्रकाश डालें ?
उत्तर- निगुण भक्ति चारा के प्रेम मागी कवियों ने अपनी रचनाओं में प्रकृति के गंभीर रूप का चित्रण करने के साथ-साथ उनमें परंपरागत ज्ञान-विज्ञान को भी पुस्तुत करने का प्रयास किया, जिसके कारण प्रसंग-नुसार उन्हें भारतीय दर्शन, पुराण ज्योतिष, शकुनशास्त्र, कामशास्त्र संगीत शास्त्र, अष्टकला, पाकशास्त्र आदि के विभिन्न तत्वों का विवरण विस्तार से उपलब्ध होता है। मध्ययुगीन परिस्थितियों को ज्ञान में रखते हुए विचार किया जाय, तो यह स्पष्ट होता है कि उस युग में ज्ञान-विज्ञान की कोई मुद्रित पुस्तक उपलब्ध नहीं थी तथा परंपरागत ज्ञान संस्कृत की दस्त-लिखित पुस्तकों तक ही सीमित रह गयी थी। अनेक कवियों ने स्वयं यह दावा किया है कि इनकी रचनाओं का युवा, बालक एवं वृद्ध अध्ययन करेंगे तो मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान वृद्धि भी होगी। ऐसी स्थिति में इन शास्त्रीय तत्वों को अथवा काव्यत्व की दृष्टि से गण्य मानते हुए भी रचयिताओं के ज्ञान उद्दर्शन की वृत्ति एवं पाठकों के ज्ञानविपत्ता की दृष्टि से मर्याद-

पुर्ण माना जाना चा हिस्सा
आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने
युग में उपलब्ध कुछ प्रेमखानों
के परिमिति के रूप में जायसी
के पद्मावत का अध्ययन किया
और इस अध्ययन से उपलब्ध
निष्कर्षों को ही सशुची परंपरा में
आरोपित कर दिया। स्वयं आचार्य
शुक्ल ने पद्मावत की पद्धति
को अमरातीय मान लेने के कारण
रत्नसेन और पद्मावती के प्रेम को
आत्मा-परमात्मा का प्रेम बनाने के लिए
उसे शुद्धी रहस्यवाद से अनुशासन
सिद्ध करने का प्रयास किया। किंतु
अगे चलकर जब उन्होंने जायसी के
दार्शनिक विचारों का अध्ययन किया
तो उनके समक्ष यह स्पष्ट हो गया
कि उनके काव्य में भारतीय अष्ट
दर्शन, वेदांत, एवं दृष्ट्योग के तत्व
ही अधिक हैं शुद्धी मत के कम।
इस परंपरा के बृहत्संख्या के वि
द्विंदु हैं जिन्होंने अपने चर्म के
परि गहरी आस्था व्यक्त की है।
किंतु उन्हें भी शुद्धी मत उच्चारण सिद्ध
करने का प्रयास किया गया है।
निष्कर्षतः, कहा जा सकता है
कि न तो सशुची प्रेमखानों के द्वितीय
कविता के सिद्धांत ही शुद्धी मत के
आधारभूत सिद्धांतों से ही मिल सकते हैं।
और न उनके भाषकों के कार्य-
व्यापार साधनापद्धति एवं सिद्धि से
शुद्धी मत का कोई संबंध स्थापित
होगा है।